साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

अशान्त विश्व में शान्ति शिक्षा : 'विश्व शान्ति' का अग्रगामी कदम

डॉ॰ किरण ग्रोवर

एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ,डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर।

सारांशः—वर्तमान दौर में पूरा विश्व एक ओर विज्ञान के माध्यम से द्रुत गति से प्रगति की राह पर चलते शान्ति का दावा कर रहा है तथा दूसरी ओर हिंसात्मक प्रवृत्ति से मानवता के अस्तित्व पर संकट आसन्न है। युद्धोन्माद के कारण शान्ति की सात्विक कामना सवालों के कटघरे में खड़ी है। हिंसा को रोकने व शान्ति को बढ़ावा देने का एक ही उपाय है—शान्ति शिक्षा। शान्ति हमारे अस्तित्व का सार है। जैन और बौद्ध धर्म में समस्त विश्व को सत्य, अहिंसा व शान्ति का सन्देश दिया गया है। सुकरात की शिक्षा से प्रभावित होकर यूनान में सिनिक्स व साइरेनेइक्स विचारधारा का प्रादुर्भाव हुआ। सूफियों ने पैगम्बरवाद, ईसाई धर्म, प्लेटोवाद,ज़रथ्रुस्ट दार्शनिकों के विचारों को आत्मसात् करते हुए आत्मा से परमात्मा के मिलन का सार प्रस्तुत किया। मानवेन्द्र नाथ राय ने नवमानववाद, टैगोर ने सच्ची मानवता, राधाकृष्णन जी ने आध्यात्मिक मानवतावाद, दान्ते ने विश्वव्यापी सम्राटतंत्र की कल्पना का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। जाकिर हुसैन ने नकारात्मक शान्ति व सकारात्मक समाज द्वारा सम्पूर्ण शान्ति की परिकल्पना की। जॉन गाल्टांग ने अन्तरराष्ट्रीय सहयोग और संगठन में विश्वास प्रदर्शित करते हुए 'विश्व सरकार की संकल्पना पर विचार किया 'विश्वशान्ति दिवस' का उद्देश्य है—धारणीय भविष्य के लिए धारणीय शान्ति। **विश्व की अधिकांश जनता की यही मांग है कि युद्ध के स्थान पर शान्ति, शस्त्रों के स्थान पर निःशस्त्रीकरण, निरर्थक सैन्यीकरण के स्थान पर जनसेना,वैभव के स्थान पर सहयोग का प्रसार अनिवार्य है।** मनुष्य अपनी विवेक बुद्धि के बल पर सर्वश्रेष्ठ है। विवेक बुद्धि के सदुपयोग से अन्तरराष्ट्रीय शान्ति स्थापित की जा सकती है।

बीज शब्दः— निःशस्त्रीकरण,सकारात्मक समाज,सहयोग,विश्व सरकार,शान्ति शिक्षा,नकारात्मक शान्ति।

मूल प्रतिपादनः—सम्पूर्ण संसार में अशान्ति, सामाजिक विश्रृंखलता,अव्यवस्था एवम् प्रवंचना का नंगा नाच हो रहा है। जाति, नस्ल, धर्म व वर्ण से विखण्डित व विलुप्त हो रही मानवता का अट्टहास किया जा रहा है। पराधीनता की काली घटाओं से आपत्ति विपत्ति व अभिशापों की वर्षा हो रही है। लोगों का चिन्तन दूषित हो चुका हो, वैचारिक उदारता के स्थान पर कट्टर संकीर्णता का प्रसार हो रहा है। युद्धोन्माद के कारण शान्ति की सात्विक कामना सवालों के

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

कटघरे में खामोश खड़ी नज़र आ रही है। सच तो यह है कि वर्तमान दौर में पूरा विश्व एक ओर विज्ञान के माध्यम से प्रगति के राह पर द्रुत गति से अग्रसर होते हुए शान्ति का दावा कर रहा है तथा दूसरी ओर हिंसात्मक प्रवृत्ति से मानवता के अस्तित्व पर संकट आसन्न है। आज वैज्ञानिक प्रगति शान्ति सद्भाव के लिए खतरा बन चुकी है व सभी जगह आशंका, सन्देह, भयस्पन्दन का आभास हो रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि वर्तमान विकसित देश भौतिक उपलब्धि की प्राप्ति को अपना मूल लक्ष्य बनाये हुए हैं, इन्हीं भौतिक आकांक्षाओं व तृष्णाओं ने राष्ट्रों के मध्य युद्ध को जन्म दिया है। युद्धों के मूल में हताशएँ और स्वार्थों के संघर्ष होते हैं। सारे विश्व को आशा निराशा के बीच झकझोर दिया गया है। आज मानव समाज कर्त्तव्यविमूढ़ सा होता जा रहा है क्योंकि उसे अपूर्व गति और असीम ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है। प्रत्येक राष्ट्र अपने आन्तरिक संकटों से पीड़ित है। राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संकट विश्व को और भयभीत किये हुए हैं। आज अमेरिका के पास इतने जैविक, रसायनिक, परमाणु हथियार हैं, जिससे पूरा विश्व तीन बार तबाह हो सकता है। अन्य देश भी शस्त्रों की होड़ में शामिल हैं फिर शान्ति कहाँ सुरक्षित है ? अपितु सर्वत्र अशान्ति ही अशान्ति है। इसी आशंका से आतंकित होकर आज का युग शान्ति की पुकार करने लगा है।

शान्ति का उद्गम स्थूल मनुष्य के मन व मस्तिष्क से होता है तथा हिंसा का उद्गम स्थल भी वही होता है। हिंसा को रोकने व शान्ति को बढ़ावा देने का एक ही उपाय है–शान्ति शिक्षा। शान्ति शिक्षा सर्वप्रथम घर से ही शुरु होती है,तत्पश्चात् स्कूल, कॉलेज,विश्वविद्यालय के जरिये विश्व पटल पर फैलाया जाता है तभी विश्व शान्ति का अर्थ सार्थक हो सकता है। विश्व शान्ति की अवधारणा को जानने के लिए अहिंसा को परखना जरुरी होगा। अहिंसा का स्वरूप इतना विराट है कि जिसमें जीवन के सभी व्यवहार, आचार, अधिकार, नैतिक दायित्व, साधना के सभी आयाम समाहित होते है। अहिंसा एक मूल्यपरक तत्त्व है। अहिंसा मनुष्य का उच्चतम विकास, प्राणी के प्रति आस्था व प्रेम बढ़ाने का उचित साधन है इसलिए मानव का सम्पूर्ण विकास और शान्ति का स्रोत भी अहिंसा ही है। मन, वचन, कर्म द्वारा जीवों को हानि न पहुंचाना ही अहिंसा है। अहिंसा इतनी शक्तिशाली है कि उसके समक्ष तामसी हिंसा निस्तेज है। सभी धर्म मानव के कल्याण की दुहाई देते हैं। सनातन धर्म का तो यह उद्घोष है कि –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग भवेत्।[1]

वैदिक प्रार्थनाओं का क्षेत्र इतना विशाल है कि एक श्लोक से समझा जा सकता है–

ओउम् धौः शान्तिरन्तरिक्षंः शान्ति पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिःब्रह्म शान्तिसर्वज्ञं शान्तिः

शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओउम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।[2]

अर्थात् मेरे लिए धुलोक,अन्तरिक्ष लोक और पृथ्वी लोक सुख–शान्तिदायक हों। जल,औषधियां और वनस्पतियां शान्ति देने वाली हों,समस्त देवता ,ब्रह्म और सब कुछ शान्तिप्रद हों ,जो शान्ति विश्व में सर्वत्र फैली हुई हों, वह मुझे प्राप्त हो अतः इस बात से सिद्ध होता है कि इससे अधिक सार्वभौमिक प्रार्थनाएँ और क्या हो सकती हैं।

शान्ति हमारे अस्तित्व का सार है। शान्ति के बिना प्रत्येक व्यक्ति,परिवार, राज्य और राष्ट्र के लिए आवश्यक है। भारतीय चिन्तन के इतिहास में उपनिषद् दर्शन का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जर्मन दार्शनिक शोपेनहर के अनुसार –'संसार में किसी अन्य ग्रन्थ का अध्ययन अतना कल्याणकारी तथा शान्तिदायक नहीं है जितना कि उपनिषदों का। यही मेरे जीवन की शान्ति रही है, यही मेरी मृत्यु की भी शान्ति होगी।'[3] भगवद्गीता में उदार समन्वय की भावना है, इस ग्रन्थ में प्रत्येक धर्म को मानने वाले के लिए रोचक सामग्री मिल जाती हैं। रामायण में चरित्र पर अत्यधिक बल दिया गया है,चरित्र ही मनुष्य को देवता बनाता है। नैतिकता, सत्यनिष्ठा, सदाचरण आदि रामायण के अनुसार धर्म के गुण हैं।

जैन और बौद्ध धर्म में समस्त विश्व को सत्य, अहिंसा व शान्ति का सन्देश दिया गया है। आचार्य महावीर ने सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान,सम्यक् चरित्र को महत्त्व देते हुए अनेकांतवाद के सिद्धान्त के माध्यम से समन्वयवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया। गौतम बुद्ध ने शील, समाधि व प्रज्ञा को दुख निरोध का साधन बताते हुए आचरण, ज्ञान व ध्यान को ही विस्तारित किया। बौद्ध धर्म ने न केवल भारत अपितु विश्व के देशों को अहिंसा, शान्ति, बन्धुत्व, सह–अस्तित्व आदि का आदर्श बताया।[4]जिस समय भारत में महावीर और बुद्ध का उदय हुआ उसी समय चीन में कन्फ्यूशियस तथा लाओत्से, ईरान में जरथ्रुष्ट, जूडिया में जेरेमिया, यूनान में पइथागोरस का आविर्भाव हुआ। शान्ति की अवधारणा यूनानियों में यहूदी धर्म से आरम्भ होकर अन्त में ईसाई धर्म में परिणित हो गई। यूनानी दर्शन का सार्वभौम शान्ति का आधार बिन्दु है। सुकरात ने मानव को न केवल सत्य व सद्गुणों का ज्ञान प्राप्त करने बल्कि उसके अनुसार आचरण के लिए प्रेरित किया। सुकरात की शिक्षा से प्रभावित होकर यूनान में सिनिक्स व साइरेनेइक्स विचारधारा का प्रादुर्भाव हुआ। इन दोनों विचारकों ने विश्व नागरिकता पर विचार व्यक्त करते हुए मनुष्यों को 'प्रकृति की ओर लौटो' का नारा दिया। एपीक्यूरियन दर्शन ने घोषणा की कि मानव जीवन का उद्देश्य दुःख से मुक्ति पाना तथा सुख की उपलब्धि के लिए प्रयत्नरत रहना है।[5] स्टोइक दर्शन ने माना है कि ईश्वर ही प्रकृति

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

है तथा प्रकृति ही विश्व के समस्त क्रियाकलापों की नियन्त्रक एवम् व्यवस्थापक है।[6]स्टोइक की विचारधारा का प्रभाव ईसाईयत पर पड़ा तथा विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त को ईसाई धर्म ने आगे बढ़ाया। सन्त अगस्टाइन ने विश्ववाद की विचारधारा को स्पष्ट करते हुए कहा कि सब मनुष्य एक ही नस्ल के हैं और ईसाई चर्च सब मनुष्य के लिए है।

सभी धर्म ग्रन्थ सत्य,अहिंसा,शान्ति, प्रेम, अखण्डता,सहयोग,सहअस्तित्व, नैतिकता,विश्वबन्धुत्व की भावना से आविर्भूत है। इक्कीसवीं सदी में ज्ञान,शान्ति और मैत्री की अनिवार्यता है,इसी से ही विश्वबन्धुत्व की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है। मध्य काल में धार्मिक विचारकों व सुधारकों ने भारत के सामाजिक–धार्मिक जीवन में सुधार लाने के उद्देश्य से भक्ति को साधन बनाकर भक्ति आन्दोलन प्रारम्भ किया। वेदो व ब्राह्मणों की महता को स्थापित करने हेतु शंकराचार्य ने दार्शनिक चिन्तन में अद्वैतवाद के सिद्धान्त का समर्थन किया। शंकराचार्य ने जिस आन्दोलन को विस्तारित किया,वही 15वीं शताब्दी में आस्था व भक्ति का अवलम्बन लेकर सिन्ध,गुजरात महाराष्ट्र से बंगाल, असम व उड़ीसा तक फैल गया। इस आन्दोलन से सन्तों के वर्ग यथा रामानन्द,नामदेव, कबीर, नानक, तुलसीदास, रविदास आदि को जन्म दिया । कबीर के बारे में मैकोलिफ ने लिखा है कि 'वे एक निडर अन्वेषी थे, भारत के हिन्दू–मुस्लिम समुदायों की एकता के महान अग्रदूत थे और मानवता की आस्था के समर्थक थे।'[7]कबीर जी ने यह उपदेश दिया कि मनुष्य को परिश्रम से उतना धन संचय करना चाहिए जितना उपयोग के लिए आवश्यक हो–

साईं इतना दीजिये,जाते कुटुम्ब समाय।

मैं भी भूखा न रहूं साधु न भूखा जाय।।

विचारों व सामाजिक आचारों में परिवर्तन लाने वाले गुरु नानक किसी पर आघात किये बिना कुसंस्कारों को नष्ट करने की शक्ति रखते थे–'उनका उपचार प्रेम, मैत्री, सहानुभूति और सर्वहितचिन्तन था। जहां एक ओर उन्होंने मानव के सामाजिक दुखों का अनुभव किया वहां दूसरी ओर हिन्दू–मुस्लिम के मध्य समन्वय का मार्ग अपनाया।'[8]सूफियों ने महोम्मद के पैगम्बरवाद और कुरान की सत्ता को स्वीकारते हुए ईसाई धर्म, प्लेटोवाद,ज़रथ्रुस्ट दार्शनिक पद्धतियों के विचारों व व्यवहारों को आत्मसात् करते हुए आध्यात्मिक उन्नति व मानव सेवा की प्रेममयी उपासना के सहारे आत्मा से परमात्मा के मिलन का सार प्रस्तुत किया।[9]

जब भारत में अंग्रज़ी हुकूमत चल रही थी,उस समय सशस्त्र क्रान्ति के अग्रदूत 14 वर्ष के विद्यार्थी नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य ने पद दलित देशवासियों की दीन हीन दशा सुधारने का प्रण लिया। नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य बाद में मानवेन्द्र नाथ राय ने नवमानववाद का सिद्धान्त स्थापित

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

किया।[10] मनुष्य समाज की मूल इकाई होने के नाते विवेकशील है, सामाजिक संगठनों में उसी को मूल आधार माना जाना चाहिए। एम एन राय का नवमानववाद का उद्देश्य संस्कृति, ज्ञान विज्ञान,आचार –व्यवहार, सदाचार व नैतिकता के प्रसार के लिए मानव समाज को पुनर्संगठित करना है जिससे मानव द्वारा मानव के शोषण का अन्त किया जा सके।

सामाजिक और मानवीय एकता के पुरोधा रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने मानवतावाद से परिपूर्ण उदात धारणाओं को स्थान देते हुए प्रेम की मांग की कि मनुष्य व प्रकृति के बीच,समाज के विभिन्न वर्गों के बीच मनुष्य व परमात्मा के बीच सामंजस्य होना चाहिए। उन्होंने माना कि प्रेम, समन्वय और स्वतंत्रता की भावना से मानव समाज का विकास होगा।'महाकवि टैगोर ने अपने उदात मानवतावादी विचारों से हमारी आंखें खोलने की चेष्टा की और हमें सन्देश दिया कि मानव मात्र से प्रेम करना तथा मानव मात्र के कष्टों को अपना कष्ट समझना और उन्हीं के सुख में अपना सुख मानना ही सच्ची मानवता है।'[11]

सर्वपल्ली राधाकृष्णन के लिए युग की त्रासदी ने मानववादी दर्शन की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। राधाकृष्णन जी ने जाति भेदभाव, असमानता और पराधीनता को अन्यायपूर्ण माना है।उन्होंने स्पष्ट उद्घोषणा की कि यदि हमें मानवतावादी लक्ष्य को प्राप्त करना है तो हमें खाइयों को भरना होगा। हमें उन चारदीवारियों को तोड़ डालना होगा जो मानव को मानव से अलग करती हैं। राधाकृष्णन जी का आध्यात्मिक मानवतावाद का दर्शन विश्व समाज के लिए आदर्श बना। उन्होंने लिखा है कि 'इतिहास में धार्मिक आदर्शवाद ही शान्ति का सबसे शक्तिशाली आशापूर्ण साधन सिद्ध हुआ है। विश्व में मानव जाति के लिए हमें प्रेम का संचार करना है।'[12]

सन्त टॉमस एक्विनवास ने अरस्तू के विचारो का बाईबिल की शिक्षाओं से समन्वय स्थापित करके नई विचारधारा को जन्म दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि मानव को उत्तम ज्ञान और उत्तम जीवन के लिए बुद्धि और विवेक का उपयोग करना चाहिए,इसी में मानव कल्याण निहित है।[13] मार्सीलियो ने शान्ति स्थापित करने के प्रश्नों व बाधाओं पर विचार करते हुए कहा कि 'मानव जीवन की सुख समृद्धि एवम् विकास के लिए शान्ति आवश्यक है। वैमनस्य एवम् कलह को किसी भी राजनीतिक समुदाय की रुग्णावस्था के रूप में देखा जाना चाहिए।'[14] दान्ते ने शान्ति की स्थापना के लिए विश्वव्यापी सम्राटतंत्र की कल्पना प्रस्तुत की व विवेकमूलक जीवन का साक्षात्कार करना उनका उद्देश्य था जिसकी प्राप्ति तभी संभव है जब लोग सहयोग व शान्ति से रहें एवम् परिवार, ग्राम,नगर व राज्य के शासन संचालन की शक्ति एक ही शासन सत्ता द्वारा शासित होने की स्थिति में समस्त विश्वसमुदाय को सार्वभौमिक शान्ति की प्राप्ति संभव हो सकती है।[15]

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

विश्व में आज व्यापक अशान्ति का बोलबाला है परन्तु शान्ति का सन्देश तो प्राचीन काल से चला आ रहा है परन्तु आज का विश्व अपने आदर्शों, व्यवस्थाओं और व्यवहारों का सम्बल लेकर मकड़ी के समान अपने ही बुने हुए जाल में स्वयं घिरा हुआ है। विश्व शान्ति की स्थापना के लिए जो मार्ग हमारे महापुरुषों ने सुझाया है वह मात्र युद्ध की विभीषका से बचने का मार्ग है। प्राचीन मानव यह मानता रहा है कि वह इस पृथ्वी का गौरव है। महाभारत में भी उल्लिखित है–ना मानुषात् श्रेष्ठतम हि किंचित्। बाइबिल में भी मानव को सृष्टि का सिरमौर कहकर उसकी महानता का गुणगान किया गया है। कुरान में भी कहा गया है कि मानव जीव जगत में सर्वश्रेष्ठ है। डार्विन ने विकासवादी सिद्धान्त में यह स्पष्ट किया कि जो सभ्यता इस सिद्धान्त पर जन्म लेगी वह तो निरंकुश और हिंसक ही होगी। विज्ञान ने विश्व को इतना छोटा कर दिया है कि कोई भी क्रिया प्रतिक्रिया किसी भौगोलिक परिधि में सीमित न रहकर विश्वव्यापी रूप ग्रहण कर लेती है। आज यदि किसी विषय पर दो राष्ट्र लड़े तो उनकी लड़ाई उन्हीं तक सीमित न रहकर समस्त मानव जाति में व्याप्त हो जाती है। हमारे महापुरुषों ने जो मार्ग बतायें हैं,उनका अनुसरण करके स्वतंत्रता, समानता,बन्धुत्व और विश्वशान्ति का सपना साकार किया जा सकता है।[16] मैडम मोंटेसरी का कथन उचित प्रतीत होता है कि बच्चों की पाठशाला इस ढंग की होनी चाहिए जिसमें बच्चों को आदर्श वातावरण उपलब्ध हो सके। जब वातावरण आदर्श होगा तब बालक स्वयं आदर्श शिक्षा की ओर पैर बढ़ाता जायेगा।[17]

भारतीय संस्कृति में वर्णित है कि शिक्षा व्यक्ति के साथ उसके सम्पूर्ण परिवेश,समाज एवम् राष्ट्र को प्रभावित करती है। व्यक्तिगत विकास के साथ उसके जीवन मूल्यों को सुदृढ़ करें क्योंकि मूल्यविहीन शिक्षा से जगत का कल्याण असंभव है। गांधी जी विश्व मानव थे ,उन्होंने शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन करके 'नई तालीम' शिक्षा प्रणाली का आरम्भ किया । आजकल यूनेस्को भी इसके महत्त्व का परीक्षण कर रहा है। गांधी जी ने विश्व समुदाय के लिए जो कार्यक्रम चलाया वह आज भी प्रासंगिक माना जाता है। उन्होंने 'नई तालीम' द्वारा समझाया कि घरेलू उद्योग धन्धों की शिक्षा देकर शासक व शोषित वर्ग के आर्थिक शोषण को रोका जा सकता है।[18] यदि भौगोलिक दृष्टि से समस्त विश्व को एक राष्ट्र मानने लगे तो युद्ध व भेदभाव की समस्याओं का अन्त हो सकता है। यदि विश्व में स्थायी शान्ति प्रदान करनी है और मानवता की रक्षा करनी है तो शान्तिमय व मानवीय उपायों को ही अपनाना होगा और व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक जीवन में एकरूपता लानी होगी, अहिंसा को अपनाना होगा और इसी के आधार पर समस्त राष्ट्रों का सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक संगठन करना होगा।

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

मानवतावादी शिक्षाशास्त्री रवीन्द्र नाथ टैगोर प्रेम,स्नेह तथा सहानुभूति को शिक्षा प्रक्रिया का अनिवार्य अंग मानते थे। अन्तरराष्ट्रीय शिक्षा के लिए उन्होंने चार साधन बताये–विशिष्ट मूल्यों का जनन, मानवीय एकता मे विश्वास, राष्ट्रों और व्यक्तियों में तर्क शक्ति का जनन, साहित्यिक विचारों का आदान प्रदान।[19] उनके विश्व भारती में सभी धर्मों के पैगम्बरों का जन्म दिवस मनाया जाता था। उनकी शिक्षा में मानवता, नैतिकता, सदाचरण तथा बन्धुत्व की भावना विद्यमान थी।

डॉ जाकिर हुसैन दार्शनिक दृष्टि से मानववादी, धार्मिक दृष्टि से धर्मनिरपेक्षतावादी, सामाजिक दृष्टि से कर्मवादी थे। वे राष्ट्र के उत्थान के लिए प्रत्येक व्यक्ति में आदर्श नागरिक के गुण सहयोग, सद्भाव, सहनशक्ति, धैर्य आदि विकसित करना चाहते थे। शिक्षा द्वारा मनुष्य के मन,शरीर व मस्तिष्क का समुचित विकास होना चाहिए जिससे मानव अच्छे–बुरे में भेद कर सके जोकि समूची मानव जाति के लिए हितकर होगा।[20]

विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न जॉन गाल्टांग ने हिंसा के विस्तृत रूप की जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रों व मानव समुदायों के बीच दो प्रकार की हिंसा व्याप्त है,प्रत्यक्ष हिंसा की अनुपस्थिति में नकारात्मक शान्ति की स्थापना होती है व अप्रत्यक्ष हिंसा की उपस्थिति में सकारात्मक शान्ति की स्थापना होती है तथा नकारात्मक शान्ति व सकारात्मक समाज राष्ट्र व विश्व पर सम्पूर्ण शान्ति की स्थापना करती है। सत्य, प्रेम, सहयोग, भाईचारा, अपरिग्रह आदि मानवीय गुणों का विकास करके हिंसा पर रोक लगाई जा सकती है।[21] यदि समाज में हिंसा को रोकना है तो दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, शरणार्थियों व शिक्षित और अशिक्षित सभी को रोज़गार व उन्नति के समान अवसर मिलें तो मानव समाज में शान्ति स्थापित होगी। जर्मन दार्शनिक इमानुएल काण्ट ने स्थायी शान्ति और प्रगति को राजनीतिक रूप देते हुए विश्व शान्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं पर विचार किया है। काण्ट विश्वबन्धुत्व के सिद्धान्त के उपासक थे व समूची मानवता को एक इकाई के रूप में देखते थे।[22]

विश्व शान्ति के समर्थक टॉमस हिल ग्रीन ने बताया कि व्यक्ति के समूह से परिवार, परिवारों के समूह से समाज,सभी समाजों के मिलन से विश्व–समाज का निर्माण होता है। संसार के समस्त व्यक्ति समान हैं एवम् उनके अधिकार भी समान हैं इसलिए प्रत्येक जाति,धर्म,समूह और समुदाय के लोगों को उन्नति ओर विकास करने का समान अवसर मिले क्योंकि शान्ति से जीवन जीने,उन्नति ओर विकास करने का समान अधिकार सबको है,यही वास्तविक मानवाधिकार हैं।[23]

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

न्याय ही शान्ति की जननी है। न्याय के बिना वर्तमान समाज में शान्ति की स्थापना नहीं की जा सकती। प्लेटो ने अपने समस्त चिन्तन का केन्द्रीय विषय आदर्श राज्य को स्वीकारा है। आदर्श राज्य की बागडोर ऐसे दार्शनिकों के हाथों में सौंपना चाहता हूं जिनमें सुन्दर आत्मा के सभी गुण होते हैं, सुन्दर आत्मा से तात्पर्य है सद्भाव, सहयोग, सहअस्तित्व, जनहित, विश्वबन्धुत्व की भावना, प्रेम, दया व नैतिक न्याय आदि हैं। इन गुणों के अभाव में वर्तमान समाज व्यवस्था में शान्ति की स्थापना असंभव है।[24]

विश्व के राष्ट्र अन्तरराष्ट्रीय सहयोग और अन्तरराष्ट्रीय संगठन में अपना विश्वास प्रदर्शित करते हुए 'विश्व सरकार की संकल्पना पर विचार करें।[25] विश्व सरकार मानव जाति को वैधानिक व्यक्तित्व प्रदान करेगी। विश्व सरकार अभिकरणों को जन्म देगी जिससे विश्वव्यापी सामाजिक परिवर्तन लाये जा सकें। विश्व सरकार द्वारा ऐसे अभिकरणों की स्थापना की जा सकेगी जो विश्वशान्ति एवम् सुरक्षा के लिए किसी भी खतरे का पूरी ताकत से मुकाबला कर सकें। विश्व सरकार **'एक सबके लिए और सब एक के लिए'** का सामूहिक शान्ति के नारे को बुलन्द करेगी।संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्तमान में विश्वशान्ति के महत्त्व को स्वीकारते हुए 1981 ई में प्रस्ताव पारित किया था जिसमें कहा गया कि हर साल सितम्बर महीने के तीसरे मंगलवार को 'अन्तरराष्ट्रीय शान्ति दिवस या विश्वशान्ति' के रूप में मनाया जायेगा।[26]संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक 2002 में बुलायी गई जिसका उद्देश्य 'विश्वशान्ति दिवस' के लिए निर्धारित तिथि तय करना था। इस बैठक में **21 सितम्बर** का दिन **'विश्वशान्ति दिवस'** के रूप में मनाने सम्बन्धी सर्वसम्मति से घोषणा कर दी गई।'विश्वशान्ति दिवस' का उद्देश्य है—**'धारणीय भविष्य के लिए धारणीय शान्ति'।**

प्रत्येक मानव की मूलभूत आवश्यकता भोजन, कपड़ा व मकान है, इसके बिना मानव का विकास संभव नहीं। प्रकृति में सभी मनुष्यों को समान अधिकार यथा विकास, सम्माननीय जीवन,शान्ति आदि सबको प्राप्य हैं फिर भी आज मानव बारुद के डेर पर बैठा है व मानव समाज संभावित तृतीय विश्वयुद्ध के डर से कांपने लगा है। सभी राष्ट्र रक्षा के नाम पर शस्त्रास्त्रों का खरीद में वृद्धि कर रहे हैं।निःशस्त्रीकरण वर्तमान काल की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में सकारात्मक कदम दिखाई पड़ रहा है। युद्ध और शान्ति का चक्र न कभी मिटा है न मिटेगा। प्रयत्न इस दिशा में होना चाहिए कि युद्ध की विनाशक शक्ति कम हो जाये। इस दृष्टि से नाभिकीय व आणविक हथियारों की निर्माण पर पाबन्दी लगाई जानी चाहिए। **विश्व की अधिकांश जनता की यही मांग है कि युद्ध के स्थान पर शान्ति, शस्त्रों के स्थान पर निःशस्त्रीकरण, निरर्थक सैन्यीकरण के स्थान पर जनसेना,वैभव के स्थान पर सहयोग का प्रसार अनिवार्य है।** भारतीय व पाश्चात्य विचारकों की अवधारणा का अध्ययन करने के उपरान्त

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

समग्रतः कहा जा सकता है कि मनुष्य अपनी विवेक बुद्धि के बल पर सर्वश्रेष्ठ है। विवेक बुद्धि के सदुपयोग से अन्तरराष्ट्रीय शान्ति स्थापित की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1 मोदी कुमार भूपेन्द्र,एक ईश्वर,भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली,1999, पृ॰सं॰ 12।

2 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 13।

3 हरि वियोगी, हिन्दू धर्म,साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 2001, पृ॰सं॰ 11।

4 के॰ सी॰ श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2007, पृ॰सं॰ 824।

5 डॉ॰ बी॰एल॰ फड़िया, पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन का इतिहास,साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2007, पृ॰सं॰ 33।

6 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 232।

7 हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत भाग–1, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2009, पृ॰सं॰ 440।

8 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 441।

9 के॰वी॰ अग्निहोत्री,भारतीय इतिहास, ऍलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली,2003, पृ॰सं॰ 189।

10 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 140।

11 डॉ॰ आर॰ के॰ अवस्थी एवम् राज कुमार अवस्थी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवम् राजनीतिक चिन्तन,रिसर्च पब्लिकेशन्स,जयपुर, 2007, पृ॰सं॰ 107।

12 डॉ॰ देवराज, दर्शन,धर्म अध्यात्म और संस्कृति ,भारतीय ज्ञानपीठ , नई दिल्ली,2005, पृ॰सं॰ 47।

13 डॉ॰ बी॰एल॰ फड़िया, पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन का इतिहास,साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा,2007, पृ॰सं॰ 298–299।

14 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 312।

15 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 322।

16 डॉ॰ हुकुम चन्द जैन एवम् कृष्णा चन्द्र माथुर,आधुनिक विश्व इतिहास, पृ॰सं॰ 74।

17 डॉ॰ सावित्री माथुर,शिक्षा दर्शन,आस्था प्रकाशन,जयपुर, 2008, पृ॰सं॰ 30।

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

18 देवीदत शर्मा,गांधी और विश्वशान्ति,पिलग्रिम्स पब्लिकेशन्स,वाराणसी,2006, पृ॰सं॰ 109।

19 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 108।

20 श्रीमती राजेश यादव,विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, कपिल प्रकाशन, पिलानी,2011, पृ॰सं॰ 20।

21 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 22।

22 उपरोक्त, पृ॰सं॰ 23।

23 डॉ॰आर॰के॰ अवस्थी एवम् राज कुमार अवस्थी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवम् राजनीतिक चिन्तन,रिसर्च पब्लिकेशन्स,जयपुर, 2007, पृ॰सं॰ 301।

24 डॉ॰ एल॰ के॰ खुराना व सी ॰आर॰ शर्मा,विश्व का इतिहास,लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन,आगरा,2003, पृ॰सं॰ 154।

25 अखिलेश्वर कुमार व रामनन्दन कुमार, यूरोप का इतिहास,प्रकाशन स्टूडेण्टस फ्रैण्डस,पटना, 1998, पृ॰सं॰ 355।

26 के॰सी॰ श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2007,पृ॰सं॰ 224।